फ्रांस और मिस्र प्रस्थान से पहले प्रधानमंत्री का भाषण

13 जुलाई, 2009

मैं आज 14 जुलाई को राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी के निमंत्रण पर फ्रांस गणतंत्र के राष्ट्रीय दिवस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए पेरिस के लिए रवाना हो रहा हूँ।

यह भारत के लोगों के लिए सम्मान की बात है कि फ्रांस के राष्ट्रीय दिवस के आयोजन में मुझे मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है । भारत और फ्रांस के बीच निकट और व्यापक स्तरीय कार्यनीति सहभागिता है । फ्रांस के साथ हमारे संबंध अनेक विषयों से संबंधित हैं । यह हमारे राष्ट्रीय हितों के अनुकूल भी है । हम व्यापार और निवेश, उच्च प्रौद्योगिकी अंतरिक्ष परमाणु ऊर्जा, रक्षा शिक्षा, संस्कृति, पर्यटन और वैज्ञानिक अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्रों में भी सहभागिता करना चाहेंगे ।

मैं इसके बाद राष्ट्रपति होस्नी मुबारक की अध्यक्षता में होने वाले गुट निरपेक्ष आन्दोलन के 15 वें शिखर-सम्मेलन में भाग लेने के लिए शर्म-अल-शेख, मिस्र जाऊँगा।

गुट निरपेक्षता भारत की विदेश नीति का मुख्य सिद्धान्त है क्योंकि इसकी शुरूआत पंडित जवाहर लाल नेहरू ने की थी । गुट निरपेक्षता हमारे विश्वास का केंद्र रहा है । पिछले शीत युद्ध के बाद विश्व दो सैन्य मोर्चों में विभक्त हुआ है । गुट निरपेक्ष आंदोलन ने उभर रही विश्व व्यवस्था में नई भूमिका अदा की है ।

गुट निरपेक्ष आन्दोलन की विविधता और सार्वभौमिकता (नाम) गुट निरपेक्ष आंदोलन को आज की चुनौतियों का सामना करने के लिए एक विशिष्ट अवसर प्रदान करती है । भारत गुट निरपेक्ष आंदोलन (नाम) को सहयोग प्रदान करने में अपनी भागीदारी निभाएगा ताकि वह सतत विकास, जलवायु-परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, आतंकवाद और अन्तरराष्ट्रीय शासन के शिल्प का सुधार जैसे मुद्दों का समाधान करने के लिए अपनी नैतिकता के उच्च्व मानक पुनः प्राप्त कर सके जिनका विकासशील देशों से सीधा संबंध है और सुसंगत है और मेरे शर्म-अल-शेख में ठहरने के दौरान मैं अन्य नेताओं के साथ द्विपक्षीप बैठकें करूंगा जिसमें बंगलादेश, यूरोप, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और वियतनाम शामिल हैं ।

****